

किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन

रीना कश्यप, शोधार्थिनी, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

डॉ. कविता शर्मा, सहायक-आचार्य, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा द्वारा प्राप्त अनुभव तभी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं जब वे किसी व्यक्ति की रुचि के अनुरूप होती है। और यह केवल वर्तमान पर ही बल नहीं देती बल्कि भविष्य की ओर भी संकेत करती है। शिक्षा के द्वारा नई-नई खोजों तथा समस्या समाधान पर बल दिया जाता है। परिवार यदि संयुक्त है एक घर में कई लोग रहते हैं तो उनमें से विशेषतया विज्ञान लोगों को अपने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करते रहने चाहिए जिससे बच्चों को अच्छी आदतें सीखने और अपनाने में सहायता मिले। बच्चों को स्कूल में भर्ती करके अभिभावकों को निश्चित नहीं हो जाना चाहिए। किशोरावस्था ऐसी अवस्था है जिसमें जोश ज्यादा और होश कम होता है। कुसंग में पढ़ने दुर्गुण सीखने और उद्वेग बनने की संभावना इन्हीं दिनों में रहती है। इसके साथ ही शालीनता और सत्प्रवृत्तियों का स्वभाव में समावेश भी इन्हीं दिनों में होता है।

मुख्य शब्द— पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना : — आज के समय में ऐसे परिवार मिलना कठिन है जहां बच्चों को अच्छे आदर्शों की शिक्षा दी जाती हो। एक छात्र को ही नहीं बल्कि अन्य प्राणियों को भी अनेक शिक्षण विधियों के द्वारा उच्च उपलब्धि वाला बनाया जाता है। जैसे घरों में पालतु कुत्तों तथा तोतों को उचित प्रशिक्षण देकर मनुष्यों के समान व्यवहार कराए जा सकते हैं। एक कुत्ता प्रशिक्षित होकर अपने मालिक की रक्षा कर सकता है। एक तोता बार बार शब्दों का उच्चारण करके बोलने लग जाता है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए अच्छे वातावरण एवं कुशल माता पिता का होना आवश्यक है जिस प्रकार 'गुरु कुम्हार घट शिष्य है, गढ़-गढ़ मारे

थाप' वाली बात यहां चरित्रार्थ होती है कि एक कुम्हार मिट्टी को थाप मार मार कर घड़े के रूप में परिवर्तित कर देता है। यहां जो कार्य कुम्हार का है वही कार्य गुरु का है जो अपने ज्ञान के द्वारा शिष्य को योग्यता से परिपूर्ण करता है।

आज परिवारों की पारिवारिक परिस्थितियां तथा वातावरण कुछ अलग ही है जिसमें रहने वाले लोग अक्सर कष्ट में ही रहते हैं। जबकि आज के समय में लोगों को साधन एवं सुविधाएं पहले से ज्यादा प्राप्त हैं। इससे लोगों को ज्यादा सुखी एवं सम्पन्न होना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं है यदि इस बात पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि आज के समय में पारिवारिक परिस्थितियां ऐसी हो गई हैं कि परिवार के लोगों ने अपनी जिम्मेदारी निभानी बन्द कर दी हैं। परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। उसने खुद को केवल बच्चों के पालन पोषण तक ही सीमित कर लिया है। परिवार में बच्चे को प्रारंभ से ही संस्कारों की शिक्षा देनी चाहिए। इस आशय से अभिभावक स्कूलों पर आश्रित रहने लगे

स्कूलों के अध्यापक भी केवल विषयों की जानकारी भर देकर काम चला लेते हैं। कठिनाई यहीं से शुरू होती है जहां उत्कृष्ट वातावरण बनाने वाली परिस्थितियां निर्मित होनी चाहिए उनकी जगह वातावरण से प्रभावित होने वाली परिस्थितियां निर्मित होनी शुरू हो जाती हैं। जिसका प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। जिस प्रकार एक राजा एक राज्य पर शासन करता है तथा पुरोहित एक गांव का यजमान होता है। उसी प्रकार एक गांव के व्यवहार को परिष्कृत करने में एक शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अच्छे नंबरों से पास होना छात्रों व अध्यापकों की प्रशंसा का केन्द्र रहा है। लेकिन आज नई-नई समस्याएं उत्पन्न होने से बच्चों के उत्तीर्ण होने के बारे में नए सिरे से सोचना होगा। शिक्षित बेरोजगार असंतुष्ट होकर गुंडागिरि की ओर मुड़ते हैं। नकल करके डराकर या पैसा देकर पास होना एक आम बात हो गई है। इस प्रकार से पास हुए छात्र या काम पर लगाए गए लोग अपना कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते क्योंकि जिस प्रकार से वे पास हुए थे उस भ्रष्टाचार को वे समाज में फैलाने का मौका ढूढ़ते रहते हैं। ऐसी अनेक घटनाओं ने शिक्षाविदों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण – सम्बन्धित साहित्य से आशय पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं विश्वकोश, प्रकाशित अनुसंधान प्रबंध, पत्रक एवं विचार विमर्श, शब्दकोश, अभिलेख तथा अन्य सूचनाओं से उपलब्ध सामग्री से होता है। पूर्व में किए गए कुछ शोध विवरण निम्नलिखित हैं –

सिंह भूवेन्द्र(2022)—“उच्च माध्यमिक स्तर में विज्ञान संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदत पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन” परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों से अच्छी पाई गई तथा सरकारी विद्यालय तथा निजी विद्यालय के छात्रों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

वैभव सिंह(2022) –शिविद्यार्थियों के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तित्व मूल्यों सृजनात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तित्व मूल्यों, सृजनात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पारिवारिक लगाव के विषय में छात्रों के प्रति अभिभावक अधिक सक्रिय होते हैं।

अतः सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में समाज, परिवार एवं माता-पिता के व्यवहार का बहुत प्रभाव पड़ता है। लेकिन अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर अभी भी शोध का अभाव है।

समस्या कथन :- किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके अन्तः एवं बाह्य व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन”

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व :-परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार का समाज से अलग कोई स्थान नहीं होता है। एक व्यक्ति का समाज के साथ तालमेल की कड़ी परिवार को ही माना जाता है। इस प्रकार समाज के लिए परिवार का बहुत महत्व है

क्योंकि समाज की मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य परिवार पर ही आधारित होता है। इस प्रकार शोधकर्त्री के मस्तिष्क में पारिवारिक पृष्ठभूमि का किशोर बालक के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है जिज्ञासा उत्पन्न हुई। वास्तविकता यह है कि बच्चा परिवार में रहकर सहानुभूति, अनुकरण, सत्य असत्य, त्याग, प्रेम, विनम्रता, अच्छा बुरा आदि चारित्रिक गुणों को सीखता है। बातचीत एवं परामर्श केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही संबंधित नहीं होते बल्कि वार्तालाप शैक्षिक उपलब्धि व चिन्तन में कैसे अपेक्षाकृत सुधार किया जा सकता है प्रत्येक छात्र की समस्याएं अलग-अलग होती हैं तथा प्रत्येक छात्र को अपनी आवश्यकतानुसार प्रगति की ओर अग्रसर करने वाले परामर्श की आवश्यकता होती है। केवल सिद्धांतों की चर्चा अथवा विवेचन कर देने से ही काम नहीं चलता बल्कि इसके लिए भिन्न-भिन्न स्तर का निर्देशन व परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए। इसके लिए बच्चे को सीधी शिक्षा न देकर किसी अन्य की घटना का वर्णन करके उस तथ्य से अवगत कराना चाहिए। यह कार्य कहानियों तथा संस्मरणों के माध्यम से और अच्छी तरह से किया जा सकता है। यदि यह सब उपलब्ध न हो तो विवेचनात्मक पुस्तकों के कुछ अंश अनुरोध करके पढ़ाए या सुनाए जाएं जिससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :-

- 1) किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- 2) किशोरों के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना:-

1. छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।
2. छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

शोध का परिसीमन :-शोध अध्ययन का परिसीमन इस प्रकार किया गया है -

शोध अध्ययन हापुड़ जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

शोध अध्ययन 40 छात्रों तथा 80 छात्राओं तक सीमित है।

प्रस्तुत अध्ययन शासकीय तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।

महत्वपूर्ण पद :-शोध कार्य में कुछ महत्वपूर्ण पद निम्नलिखित हैं –

पारिवारिक पृष्ठभूमि – बच्चों का सही ढंग से समग्र लालन-पालन करने के लिए निर्वाह व्यवस्था बनाने के एवं साधन जुटाने के अतिरिक्त तीन बातें विशेष रूप से आवश्यक होती है जैसे – प्रेम, अनुशासन एवं स्वतन्त्रता। ये तीनों विशेषताएं बच्चों के हृदय, चरित्र और व्यक्तित्व को अभिसिंचित करती हैं तथा उन्हें सही दिशा देकर एक सही और अच्छा नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं। ये बालक में जन्म से तीन वर्ष के अन्दर ही विकसित होने वाले गुण हैं।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व – बहिर्मुखी शब्द को प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जुंग ने 20 वीं शताब्दी में दिया था। बहिर्मुखी व्यक्ति की रुचि बाह्य दुनिया में अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति अपने विचारों एवं भावनाओं को स्पष्ट करने में झिझकते नहीं हैं। ये व्यक्ति व्यवहार कुशल होते हैं तथा भावों के अनुसार अपने निर्णय लेते हैं। ये चिन्तामुक्त व धारा प्रवाह बोलने वाले होते हैं।

अंतर्मुखी व्यक्तित्व – इस श्रेणी के व्यक्ति अपने आप में ही अधिक खोए रहते हैं। ये सामाजिक रूप से कटे होने के कारण अधिक दोस्त नहीं बना पाते हैं। इनके निर्णयों में अपनी भावनात्मक स्थिति में निजता का प्रभाव होता है। ये समूह की अपेक्षा एक-एक व्यक्ति से बात करने को अधिक पसन्द करते हैं।

कामकाजी माताएं – इस श्रेणी में वे माताएं आती हैं जो नौकरी करती हैं तथा घर से बहार जाती हैं। इनकी दिनचर्या बहुत भागदौड़ भारी होती है। एक कामकाजी माता के लिए समय प्रबन्धन, परिस्थितियों से तालमेल बैठाना एवं कार्यस्थल पर अपनी भूमिका को सकारात्मक रखना आवश्यक है।

गैर-कामकाजी माताएं – ये माताएं अपने परिवार के ही लानल-पोषण में व्यस्त रहती हैं। इनका सोचने का अपना नजरिया होता है। ये बाहरी दुनिया से अनभिज्ञ होने के कारण अपनी विचार धारा को कम बदल पाती हैं जिस कारण नवीन सुधारों में अधिक तत्पर नहीं होती हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त चर :- प्रस्तुत शोध में किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनके व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः यहां पर स्वतंत्र चर पारिवारिक पृष्ठभूमि है तथा आश्रित चर व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक उपलब्धि है। प्रस्तुत शोध कार्य में सम्मिलित चर निम्न प्रकार हैं –

स्वतन्त्र चर :- पारिवारिक पृष्ठभूमि। **आश्रित चर** :- व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि।

अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में चरों को एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

डॉ पी. पी. अजीज एवं डॉ रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित अंतर्मुखता, बहिर्मुखता इन्वेंट्री।

शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 9वीं की परीक्षा के अंक-पत्र एकत्रित किए गए।

जनसंख्या :- शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में कक्षा 10वीं के कुल 120 छात्र एवं छात्राओं का शोध कार्य के लिए चयन किया गया, जिसमें 40 छात्र, तथा 80 छात्राओं को चुना गया है।

परिकल्पना : 1. छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 1

समूह	N	M	S.D.	t-value
कामकाजी माताओं की छात्राओं की हाई स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि।				

	50	99.86	9.85	0.062
कामकाजी माताओं के छात्रों की हाई स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि।	30	100.00	9.88	

सांख्यिकीय विश्लेषण – तालिका संख्या 1 कामकाजी माताओं के छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़े प्रस्तुत करती है। उनका औसत क्रमशः 99.86 और 100.00 है और उनका एस.डी. क्रमशः 9.85 और 9.88 है। कामकाजी माताओं की छात्राएं कामकाजी माताओं के छात्रों की तुलना में अकादमिक रूप से थोड़ी बेहतर होती हैं लेकिन मानक सारणी मान 0.05 स्तर पर यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए प्राप्त अंतर वास्तविक नहीं है। यह नमूनाकरण त्रुटि के कारण है। इसलिए कामकाजी माताओं के छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान है। इसका मतलब है कि माता के कामकाजी होने का छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई असर नहीं पड़ता है।

परिकल्पना : 2 छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 2

समूह	N	M	S.D.	t-value = $\frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\left(\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}\right)}}$
बहिर्मुखी छात्राओं की हाई स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि।	20	99.75	9.55	0.00
बहिर्मुखी छात्रों की हाई स्कूल की शैक्षिक उपलब्धि।	20	99.75	9.75	

सांख्यिकीय विश्लेषण – तालिका संख्या-2 बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़े प्रस्तुत करती है। उनका औसत क्रमशः 99.75 और 99.75 है और उनका S.D. क्रमशः 9.55 और 9.75 है। ज.का मान 0.00 है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राएं एक ही स्तर के होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक उपलब्धि लगभग समान है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले छात्र एवं

छात्राओं की हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान है। इसका मतलब है बहिर्मुखी व्यक्तित्व का हाईस्कूल के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध के आधार पर सुझाव – 1. विद्यार्थियों की माताओं की भूमिका लड़कों एवं लड़कियों दोनों के लिए होती है।

2. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व पर उनके माता-पिता की जागरूकता ही प्रभाव डालती है।

3. कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं की कार्यशैली का प्रभाव किशोर लड़के एवं लड़कियों पर पड़ता है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :-

- अध्ययन को अधिक विश्वसनीय एवं वैध बनाने के लिए एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने हेतु सम्मिलित किया जा सकता है।
- समय तथा धन की उपलब्धता को बढ़ाकर अध्ययन में अधिक व्यापकता, गहनता तथा लगनशीलता लाने का प्रयास किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन को तीन ही चरणों तक सीमित न करके कई चरणों के परिपेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।
- वर्तमान शोध अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, आर. ए. : शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2007।
- पाण्डेय, कामता प्रसाद : अभिक्रमित अधिगम की टेक्नोलॉजी, अमिताश प्रकाशन, गाजियाबाद, सन् 1988।
- भटनागर, सुरेश : शिक्षा मनोविज्ञान, इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली, 2000।
- अल्पोर्ट, बर्नन और लिन्डजे : मैनुबल फॉर द स्टडी ऑफ वेल्थूज वोस्टन सन् 1960।

- मल्होत्रा एस.पी., मल्होत्रा, पी.बी. व आर.एन. : शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- एस० पी० गुप्ता ;2017-अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, पेज न० 37,38,39,40।
- प्रो० रमन बिहारी लाल – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार , पेज न० 391,394,395.।
- डॉ० पोथन, डॉ० होम्या – परिवार और समाज, वंशीलाल भेड़तिया कमल प्रकाशन इंदौर।